ख्रीस्तीय और हिन्दुओं के आपसी सम्मान,विष्वास और सहयोग से प्रगति की ओर

Vatican City

2010

प्यारें हिन्दू प्रियजनों

हर साल की तरह इस साल भी हम आपके दिपावली पर्व में भाग लेते हैं हम धर्माध्यक्षीय अन्तरधार्मिक संवाद सम्मेलन की ओर से आप सभ ी को दीपावली की हार्दिक षुभकामनाएँ और बधाई देते हैं सर्वज्योति ईष्वर आपके मन और दिलों को प्रकाषित करे तथा सामुदायिक और आपसी सबंध को मजबूत बनाएं हम सभी आपको खुषियों भरी दीपावली की षुभकामनाएँ देते हैं

इस षुभ अवसर पर हम चिन्तन करना चाहते हैं कि हम कैसे आपसी भाईचारे और सहयोग को मजबूत बनाएँ जो हमें आपसी सम्मान और प्रगति की ओर ले चलें

सम्मान का अर्थ यह है कि हम व्यक्तिगत प्रतिश्ठा की परवाह किए बिना, हर व्यक्ति की उचित प्रतिश्ठा का ध्यान रखें और स्वाभाविक रूप से एक दूसरे के साथ संबंध बनाएँ प्रतिश्ठा करने का अर्थ है कि हम हर व्यक्ति की भावनाओं का ख्याल करें किसी प्रकार की हिंसा, उपेक्षा और तुच्छता से दूर रहें अतः पारस्परिक षान्ति और मेल–मिलाप ही सामाजिक प्रगति का मूल आधार हैं

दूसरी तरफ विष्वास हर मानव के व्यक्तिगत और सामुदायिक संबंधों को विकसित करता हैं आपसी विष्वास न केवल लोकहित के लिए प्रगति का साधन है बल्कि यह हम सभी के लिए एक दृढ़ विष्वास का ऐसा प्रेरक वातावरण तैयार करती है जिसके द्वारा हम एक दूसरे पर आश्रित रहकर सार्वजनिक उद्देष्य पा सकते हैं

यह विष्वास अधिकार, व्यक्ति और समुदायों में तत्परता और उत्सुकता पैदा करता है, और क्रियात्मक सहयोग देने की सहभागी बना देती है, न केवल अच्छाई के क्षेत्र में, बल्कि अपने समय के सामान्य रूप से गंभीर और अनसुलझी चुनौतियों को सामने लाने में

अपनी उपर की वचनबद्धधता को ध्यान में रखते हुए हमें अन्तर धार्मिक संवाद को आगे बढ़ाना हैं हम सभी अच्छी तरह जानते है कि सम्मान और विष्वास वैकल्पिक विशेष नहीं है, बल्कि यह महल के दो ऐसे स्तम्भ है जिस पर यह वचनबद्धता टिकी हैं यह वचनबद्धता उन विष्वासियों और व्यक्तियों को षामिल करती है जो सच्चे दिल से इस सच्चाई की खोज करते हैं संत पापा बेनेदिक सोलहवें के ष्दों में, जो उन्होंने 25 अप्रैल 2005 को दूसरी कलीसियाओं के प्रतिनिधियों को, दूसरे कलीसिया समुदायों को और अन्य धार्मिक परम्पराओं व विष्वासियों को संबोधित करते हुए कहा था षान्ति का षिल्पकार बनकर ही हम अपसी मेल–मिलाप, और प्रेम बढ़ा सकते हैं

इस प्रकार हमारे अन्तरधार्मिक संबंध में जितनी सच्ची वचनबद्धता होगी, उतना ही अधिक आपसी सम्मान और विष्वास बढ़ेगा, जो सहयोग और सामान्य व्यवहार को बढ़ाता रहेगां संत पापा जौनपौल

के उन खुषी के पलों को याद करें जब वे 1986 में पहली बार भारत आए थें उन्होंने चेन्नई में गैर–खीस्तीयों को संबोधित करते हुए कहा था, दूसरे धर्मो के सदस्यों के साथ संवाद, हमारे आपसी सम्मान को और गहरा बनाता है और उन नाजुक रिषतों के लिए रास्ता तैयार करता है जो मानवीय दुःखों का निवारण करता हैं

एक सामान्य व्यक्ति की तरह हम प्रत्येक व्यक्ति और सभी समुदायों के हित का ख्याल करें˙ हम उस तरफ अधिक ध्यान दें और कोषिष करें कि हम एक सम्मान, विष्वास और सहयोग की संस्कृति को बढ़ावा दें

फिर से मैं तहे दिल से आप सभी को दीपावली की षुभकामनाएँ देता हूॅं

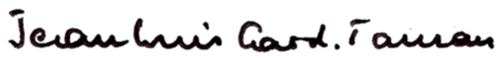

जीन लूईस कांर्दिनल टाउरन

सभापति

महाधर्माध्यक्ष पायर लियूगी सेलटा

सचीव

PONTIFICAL COUNCIL
FOR INTERRELIGIOUS DIALOGUE
00120 Vatican City

Telephone: +39.06.6988 4321
Fax: +39.06.6988 4494

E-mail: dialogo@interrel.va
http://www.vatican.va/roman_curia/pontifical_councils/interelg/index.htm